चतुर कौन?

गीता आयंगर

चित्रांकन : अतनु राय

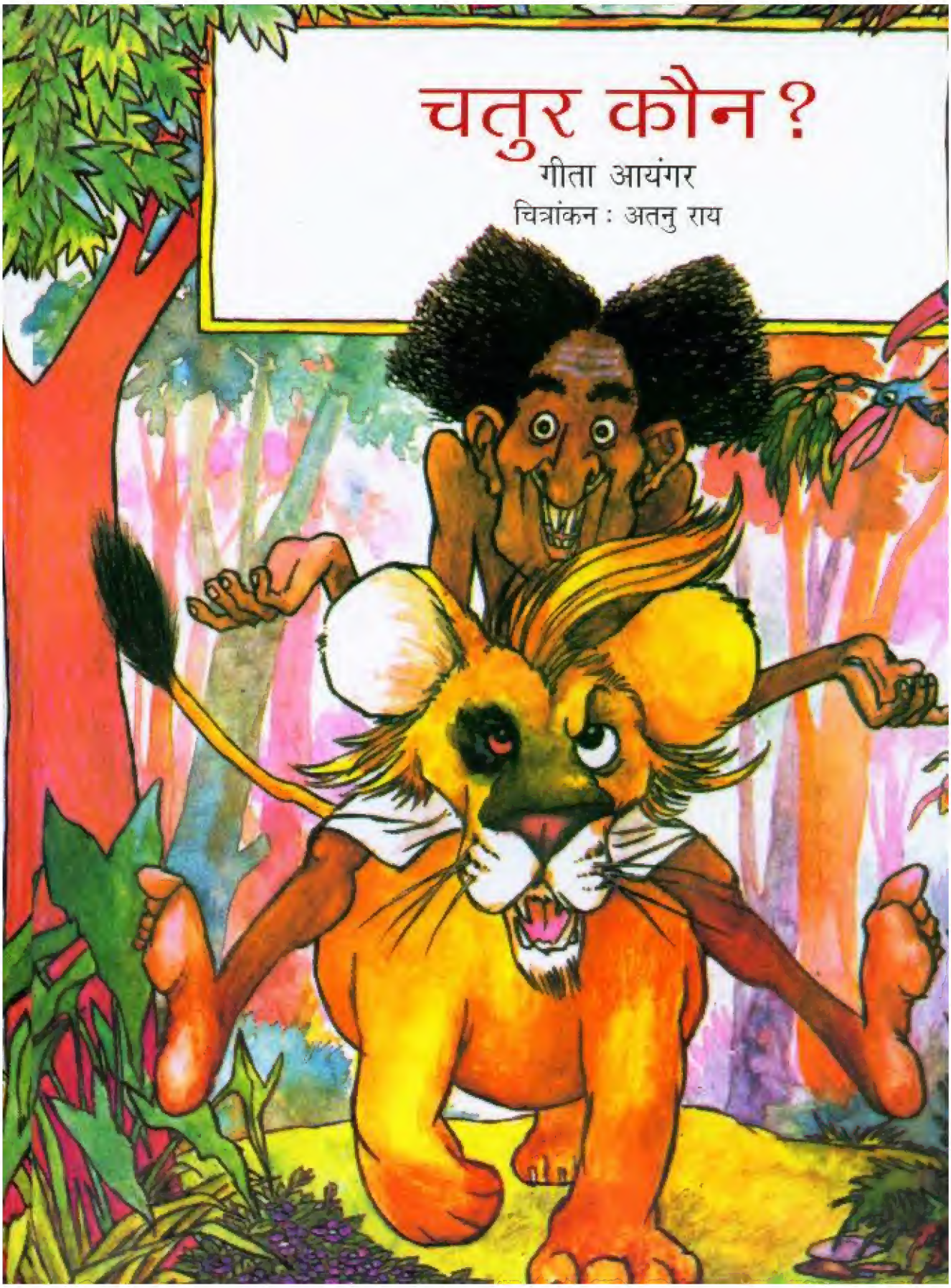

ISBN 978-81-237-1021-1

पहला संस्करण : 2005

बारहवीं आवृत्ति : 2012 *(शक 1934)*

मूल अंग्रेजी © गीता आयंगर, 1994

हिंदी अनुवाद © नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 1995

Who's Smarter *(English)*
Chatur Kaun? *(Hindi)*

₹ 30.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

नेहरू बाल पुस्तकालय

चतुर कौन ?

गीता आयंगर

चित्रांकन

अतनु राय

अनुवाद

प्रवीण शर्मा

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

एक

एक दिन प्रात:काल गणपति नाम का एक युवा ब्राह्मण गांव के पास की नदी में नहाने गया, जैसा कि वह प्रतिदिन किया करता था।

सूरज अभी अभी निकला था और नदी पर अपनी सुनहरी आभा बिखेर रहा था। पानी अभी ठंडा था। गणपति ने स्नान किया और सूर्य देवता की पूजा की।

गणपति ने धोए हुए कपड़ों को निचोड़ कर एक टोकरी में रखा और जंगल में एक खुले स्थान की ओर चल पड़ा। यहां वह प्राय: प्रात:कालीन प्रार्थना में भगवान को अर्पण करने के लिए फूल एकत्र करने जाया करता था। पक्षी प्रसन्नचित्त चहचहा रहे थे और नजदीक ही एक कोने में धोबी का गधा चुपचाप चर रहा था।

गणपति ने जंगली चमेली की सुंदर झाड़ी देखी और उसमें से बहुत से सुंदर फूल तोड़ लिये। तब वह गुड़हल की तलाश में निर्वृक्ष क्षेत्र के आखिरी किनारे की ओर चल पड़ा। इसके बाद यदि उसे एक साहसी, चुस्त और किशोर शेर नहीं मिला होता तो संभवतया वह घर ही गया होता।

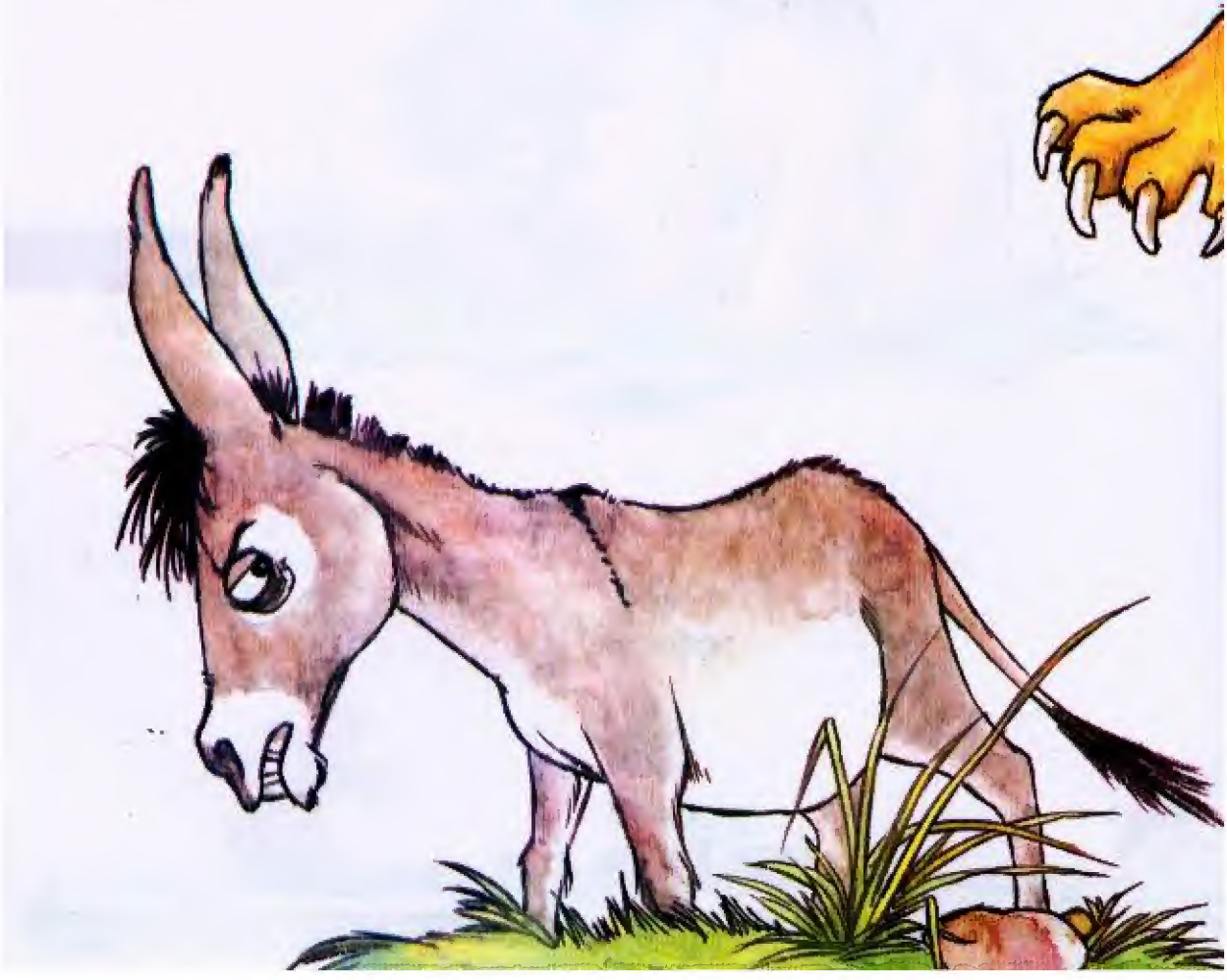

इस किशोर शेर में अदम्य साहस था। वह सदैव कुछ नया कर दिखाने के चक्कर में रहता था। अपनी बाल्यावस्था में धक्के मुक्के में वह अपने वंश में सबसे ज्यादा तेज अथवा गुलगपाड़िया शावक था जो सदैव अपने भाई बहनों से झगड़ा किया करता था और मां बाप अक्सर उसे ही डांटते रहते थे। मगर वह ऐसी डांट का कभी भी बुरा नहीं माना करता था। वह झगड़ा करता और हंसते हंसते थप्पड़ खा लिया करता। अब जब वह बालिग हो गया था तो अपनी मर्जी का मालिक स्वयं ही था और कभी भी पैरों पर पानी नहीं पड़ने देता था।

उस सुबह वह वहीं जंगल में था। उसने इधर उधर देखा। गणपति निर्वृक्ष क्षेत्र के आखिरी किनारे पर था, इसलिए उसने उसे नहीं देखा। इसी समय उसकी नजर धोबी के गधे पर पड़ी। उसे देखते ही उसने सोचा, 'वाह ! यह तो खूब बढ़िया भोजन रहेगा और दिन की शुरुआत भी अच्छी होगी।' इस विचार मात्र से ही उसने चटखारा लिया (जो उसने गलत किया था, क्योंकि उसकी आवाज को सुनते ही गधे ने अपने कान खड़े कर लिये थे)। अब शेर बड़ी शान से गुर्राया और बदकिस्मत गधे की ओर झपटा।

क्या वास्तव में वह गधे का दुर्भाग्य था ? नहीं, वास्तव में ऐसा नहीं था। क्योंकि वह ऐसे हुआ था कि शेर ने गधे पर पीछे की तरफ से आक्रमण किया था, लेकिन शेर के पकड़ पाने से

पहले ही गधे ने उसे ऐसी जोर की दुलत्ती मारी कि किसी भी शेर को पहले कभी ऐसे मुंह की नहीं खानी पड़ी होगी । शेर दूर जा गिरा और उसकी शानदार दहाड़, एक चीख में परिवर्तित होकर पिनपिनाहट में दब गयी । उसकी आवाज यूं निकली थी :

इइंक
स्क्रूइ एंक्क
ओए – ग्रूइ एंक्क
ररो एंक्क
गर्रर्ऽऽ एनेनेन

और जब शेर पीड़ा तथा चोट की दशा में हक्का बक्का सा लेटा हुआ था तो गधा पलटा और बिना आगा पीछा देखे सरपट भाग गया । वह भागते हुए ऊंचे उंचे ठहाके लगाता जा रहा था, मगर किसी को यह नहीं पता था कि वह हंस रहा है या केवल अपने स्वामी को पुकार रहा है ।

अब जब गणपति ने शेर की दहाड़ सुनी तो वह जल्दी से उस विचित्र घटना को देखने के लिए वहां पहुंच गया । उसने गधे को ठहाके लगाते देखा जो उस निरीह प्राणी के लिए वास्तव में बहुत बड़ी बात थी, तो वह भी ठठाकर हंसने लगा । हंसते हंसते उसकी आंखों में आंसू आ गये । जब उसने जंगल के राजा शेर को ढेर सा लेटे हुए देखा तो उसकी ओर उंगली से इशारा करते हुए और जोर से हंसा । यह बिल्कुल वैसे ही था जब आप किसी को केले के छिलके से

फिसलते हुए देखते हैं और यहां यह शेर बिल्कुल वैसे ही गधे से फिसला हुआ प्रतीत हो रहा था।

जब बेचारा शेर होश में आने के लिए साहस बटोर रहा था तो उसे गणपति की हंसी की धीमी सी आवाज सुनाई दी। उसने आंखें खोलने की कोशिश की। उसकी दायीं आंख में काफी चोट लगी थी क्योंकि यहीं गधे ने दुलत्ती मारी थी। पहले कभी भी किसी शेर को शायद ऐसी मुंह की नहीं खानी पड़ी होगी। उसकी बायीं आंख ठीक थी। ज्यों ही उसने इसे खोला तो एक दारुण दृश्य देखा कि उसके सामने एक अदना सा आदमी पूर्णतया उसकी पकड़ की सीमा में खड़ा है, जो भागने की कोशिश भी नहीं कर रहा और सबसे बुरी बात कि हंसने की आवाज भी उसी की थी। शेर ने आंखें झपकाईं और सिर को झटका दिया, घुमाया और इधर उधर देखा। उसे हंसने की कोई बात नहीं दिखाई दी। अत: उसने गुस्से से पूछा, "इतना हंसने की क्या बात है?"

अपने गालों से आंसू पोंछते हुए बिना सोचे समझे गणपति ने उत्तर दिया, "तुम बड़े विचित्र हो।"

इतना सुनते ही शेर को बहुत गुस्सा आया और वह पूंछ हिलाते हुए दहाड़ा। निस्संदेह उसको पीड़ा अभी भी हो रही थी, तभी उसकी आवाज एकदम धीमी निकली थी। मगर जब उसने फिर से कोशिश की तो उसकी दूसरी दहाड़ कुछ ऊंची थी और तीसरी तो पूर्णतया गर्जक थी। देखते ही देखते शेर खड़ा हो गया और गणपति की ओर झपटा।

अचानक गणपति ने देखा कि वह जिस शेर का मजाक उड़ा रहा था, वही बहुत गुस्से में

उसकी तरफ आ रहा है। वह घबराया हुआ कुछ कदम पीछे की ओर हटा, मगर वृक्ष के तने से जा टकराया। शेर लगभग उसके ऊपर था और निश्चय ही उसे दबोच चुका होता, मगर किसी तरह गणपति ने गीले कपड़ों तथा फूलों वाली टोकरी क्रुद्ध शेर के सिर पर दे मारी।

शेर को रोकने का यह बड़ा कारगर उपाय था।

बेचारे बदकिस्मत शेर को बीच में ही रुकना पड़ा। अब उसे स्वयं को टोकरी तथा उसके सामान से मुक्त करना था। ऐसा करने के बाद उसने देखा कि गणपति पेड़ की सबसे ऊंची टहनी पर उसकी पहुंच से परे जा चुका था।

एक बुद्धिमान शेर अवश्य ही चला गया होता, मगर यह अभी छोटा तथा मूर्ख था। इसके अतिरिक्त सुबह की घटनाओं से वह काफी खिन्न था, अत: उसने गणपति को पकड़ने का निश्चय कर लिया था।

"मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगा", शेर दहाड़ा। "जब तक तुम नीचे नहीं आते मैं यहीं बैठा रहूंगा।"

शेर के चंगुल से बच निकलने पर प्रसन्न हो गणपति चिल्लाया, "मैं तुमसे डरता नहीं हूं, बल्कि तुम तो मुझे पागल लगते हो।"

इससे शेर को और अधिक गुस्सा आया। उसने अपने दांत किटकिटाये और काफी देर तक जोर जोर से गुर्राता रहा। तब वह पेड़ के पास बैठ गया। कभी गणपति ने नीचे उतरने की कोशिश की तो पाया कि शेर की आंखें उस पर टिकी हुई थीं, मगर गणपति को अब शेर की शक्ति तथा हिम्मत का अंदाजा लगाने का समय मिल गया था — यह एक छोटा सा शेर था, फिर भी इतना छोटा नहीं कि जिसकी उपेक्षा की जा सके। उसे आश्चर्य हुआ कि वह इस तरह कितनी देर पेड़ पर बैठा रहेगा क्योंकि नीचे शेर उसका इंतजार कर रहा था। उसे विचार आया कि वहां पास ही अन्य शेर भी होंगे, आखिर शेर का भी अपना एक परिवार होगा।

उसने मैत्रीपूर्ण भाव से कहा, "देखो दोस्त, तुम्हारे मां बाप तुम्हारा इंतजार कर रहे होंगे।"

"तुम नीचे आओ, मैं उनसे तुम्हारा परिचय करा दूंगा", शेर गुर्राया।

"तुम ऊपर क्यों नहीं आ जाते? तभी हम ठीक से बात कर पायेंगे", गणपति ने मजाक उड़ाते हुए कहा।

शेर ने गुस्से से भरी अपनी आंखें उसी पर स्थिर रखीं और वहीं लेटा रहा। मगर गणपति बोलता गया, "निस्संदेह अगर तुम खो भी जाते हो तो तुम्हें ढूंढ़ने में तुम्हारे मां बाप को कोई

परेशानी नहीं होगी। उन बेचारे बगुलों की तरह नहीं जो एक दिन अपने बच्चों को नहीं ढूंढ़ पाये थे। मुझे विश्वास है कि तुमने अवश्य ही यह कहानी सुनी होगी।"

शेर तपाक से बोला, "क्या ! बगुले ?"

"हां हां, तालाब के पास चरागाह में रहने वाले दो सफेद बगुलों को क्या तुम जानते हो..."

"नहीं, मैं नहीं जानता", शेर ने खट से जवाब दिया।

"ठीक है, तब मैं तुम्हें उनकी कहानी सुनाता हूं", गणपति ने गला साफ करते हुए कहा। "यह उन दो बगुलों की कहानी है जो परेशान से अपने बच्चों को ढूंढ़ रहे थे।"

शेर घास पर आराम से बैठ गया क्योंकि उसे अच्छी कहानियां सुनने का शौक था।

दो

गणपति ने शुरू किया, "किसी समय एक तालाब के किनारे चरागाह में लंबी लंबी घास के बीच दो बगुलों का घोंसला था। इस व्यस्त तथा प्रसन्नचित्त पक्षियों की जोड़ी का अपना छोटा सा परिवार था और बच्चे सदैव भूखे रहते थे। दोनों सारा दिन अपने चूजों के लिए स्वादिष्ट भोजन की तलाश में लंबी घास के अंदर बाहर आया जाया करते थे।"

"मगर घास में वे अपना घोंसला कैसे ढूंढ़ते थे", शेर ने पूछा।

"उन्हें इसमें कभी भी परेशानी नहीं होती थी क्योंकि घास हमेशा उचित ऊंचाई तक ही होती थी", गणपति ने कहा।

"नहीं, ऐसा संभव नहीं है", शेर ने आपत्ति की।

"मगर ऐसा ही था", गणपति ने आग्रहपूर्वक कहा। "इसका भी कारण था। तुम देखते होगे कि चरागाह में हर रोज गायों का एक छोटा सा झुंड घास चरने आया करता है तथा घास की कटाई उचित ऊंचाई तक हो जाती है। इस प्रकार बुगलों के परिवार के साथ तब तक सभी ठीक ठाक चलता रहा जब कि एक दिन..."

गणपति ने इस प्रकार विराम लगाया कि शेर सचमुच ही आगे की कहानी जानने को उत्सुक हो जाये।

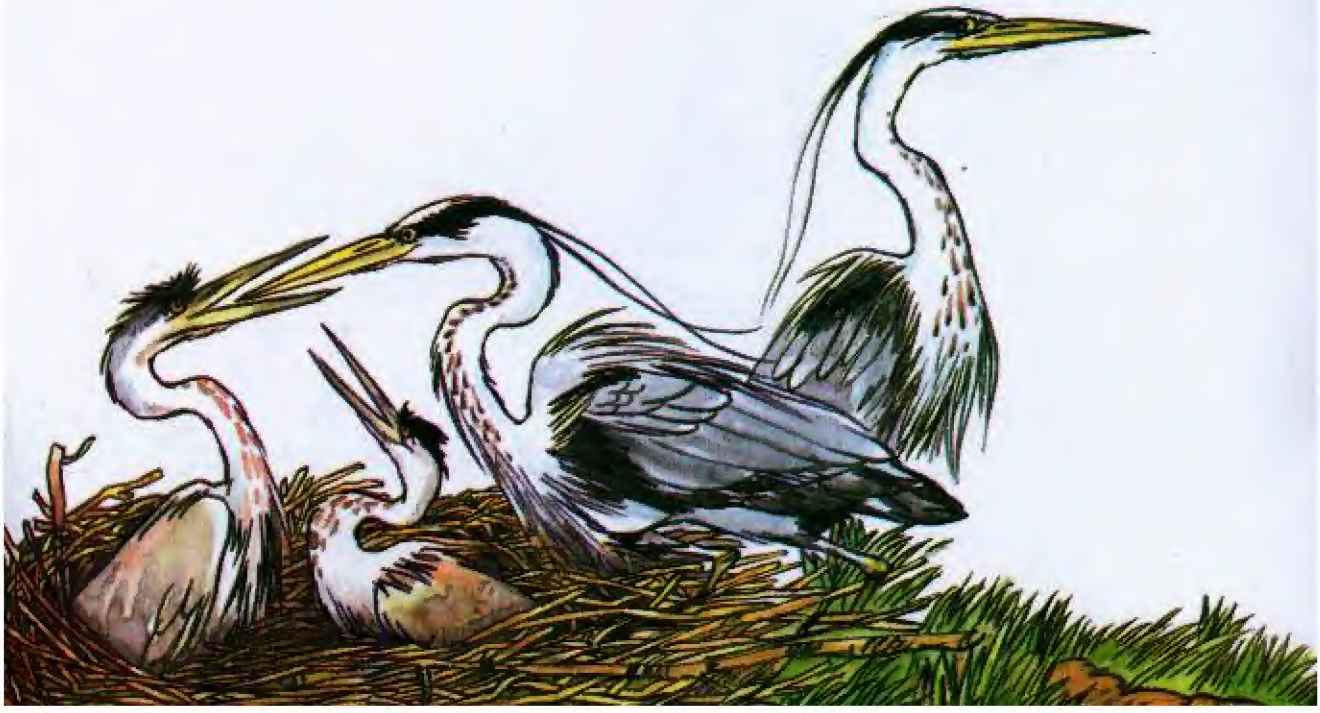

"तब क्या हुआ", शेर ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"उस प्रातः भी बगुले रोज की तरह अपने बच्चों के लिए भोजन लेने गये। मां तो शीघ्र ही एक छोटे से कीड़े को लेकर वापस आ गयी। वह उड़ती हुई अपने घोंसले के पास आयी, मगर अफसोस कि उसे घोंसला नहीं मिला। वह कभी इधर जाती तो कभी उधर और फिर वापस आ जाती, मगर उसे घोंसले का नामोनिशान नहीं मिला। उसने संकट की सूचना देने के लिए एक चीख भी मारी और पुनः ढूंढना शुरू कर दिया। पिता ने जब चीख सुनी तो जल्दी से वापस आ गया। उसने देखा कि मां चरागाह के उसी हिस्से के आसपास बार बार चक्कर लगा रही थी, जहां घोंसला था। मगर घोंसला कहां था? बाप को भी चिंता हुई। दोनों ने आधा घंटा और ढूंढ़ा और अंत में वे थककर एक चट्टान पर, जो घास में से ऊपर उठी हुई थी, उदास से बैठ गये।"

"घोंसले का क्या हो सकता था", शेर ने टोकते हुए पूछा।

"वास्तव में यही बात दोनों बगुले भी सोच रहे थे", गणपति ने कहा।

"मां ने आसपास देखा कि अगर कोई हो तो उसकी सहायता कर सकता है, मगर वहां कोई भी नहीं था। तभी पिता ने कहा, 'गायें भी नहीं हैं अन्यथा हम उन्हें ही सहायता के लिए कह सकते थे।' मां ने उदासी से सिर हिलाया और इस बात से सहमत हो गयी कि निश्चय ही यह उनकी बदकिस्मती थी क्योंकि गायें अक्सर सुबह सुबह ही उनके खेत में चरने के लिए आ जाया करती थीं। ज्यों ही उसने यह कहा तो पिता आवेश में चिल्लाया, 'मुझे पता है कि घोंसले का क्या हुआ है। यह इतने बड़े घास में कहीं छिप गया है।' मगर मां ने अविश्वास से झल्लाते हुए कहा, 'पहले तो ऐसा कभी भी नहीं हुआ?"

"हां तुमने तो कहा था कि गायें सदैव घास को अपने आप ही काट दिया करती थीं", शेर गुर्राया। "तो अब क्या हुआ?"

"देखो, गायें घास चरने न तो उस दिन आयी थीं और न ही उसके पहले दिन । चूंकि उन्होंने घास को नहीं काटा, तभी चरागाह में घास बहुत बड़ी हो गयी थी जिसमें बगुलों के घोंसले को देखना मुश्किल था। पिता बिल्कुल ठीक कह रहा था और जब उसने अपनी पत्नी को समझाया तो वह भी मान गयी। मगर उन्हें अभी तक घोंसला ढूंढ़ने का तरीका नहीं सूझा था। शेर खान! अगर तुम उनकी जगह होते तो क्या करते?" गणपति ने पूछा।

"मैं गायों को चरागाह में चरने के लिए लाता", शेर ने उत्तर दिया।

"बिल्कुल ठीक!" गणपति ने कहा। "ठीक यही बगुलों ने भी करने की कोशिश की थी।

वे समीप ही एक किसान के घर गये। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि छप्पर में वही गायें थीं जिनकी उन्हें तलाश थी। बगुलों ने कहा, 'मित्रो, कृपया हमारे खेत में आइये और घास काट दीजिए। कृपा करके आप शीघ्र ही हमारे साथ चलिये।' उनकी बात सुनते ही झुंड के मुखिया ने कहा, 'हमें आपके साथ चलने में कोई आपत्ति नहीं है, मगर हम तब तक वहां नहीं जा सकते जब तक ग्वाला हमें वहां नहीं ले जाता।'

पिता ने चिंतित स्वर में पूछा, 'क्या वह आपको आजकल किसी दूसरी जगह पर ले जाता है?' एक गाय ने कहा, 'नहीं नहीं, वह आज और कल दोनों दिन आया ही नहीं। हमें भी सारा दिन घर में बैठना अच्छा नहीं लगता।' जब बगुले कुछ चिंतित से दिखे तो उसने पूछा, 'क्या कुछ परेशानी है?' तब बगुलों ने सारी बात बतायी और गायों ने वायदा किया कि ग्वाले के आते ही वे उनकी मदद के लिए आ जायेंगी।"

"तब वे अवश्य ही ग्वाले के पास गये होंगे", शेर तपाक से बोला।

"हां, जब बगुले ग्वाले के घर गये तो वह अपनी झोपड़ी के सामने बड़ा उदास सा बैठा था। जब उसने बगुलों की समस्या के बारे में सुना तो बताया कि अगर उसे खाने के लिए कुछ थोड़ा

सा भी मिल जाये वह उनके साथ जा सकता था। उसने बताया कि उसे बहुत भूख लगी है क्योंकि दो दिनों से उसकी पत्नी ने कुछ भी पकाया नहीं था।"

"मगर ऐसा क्यों था?"

"खैर, जब बगुलों ने ग्वाले की पत्नी से इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि उसका दो वर्ष का बच्चा सारा समय रोता रहता था। इससे वह इतनी परेशान हो जाती थी कि कुछ भी काम नहीं कर पाती थी।"

"छि: ! छि:, बच्चा इतना चिड़चिड़ा क्यों था", शेर ने पूछा।

"बगुलों ने भी यही बात बच्चे से पूछी तो उसने रोते हुए बताया कि चींटियां निरंतर उसे काटती रहती थीं। वास्तव में बेचारे बच्चे के हाथ लाल तथा सूजे हुए थे।"

"छि: गंदी चींटियां, मुझे तो वे शुरू से ही बुरी लगती हैं", शेर ने कहा।

"मगर तुम्हें पता है तब बगुलों ने चींटियों से इस बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि इसका भी एक कारण है। शेर खान, तुम्हारे विचार में यह क्या हो सकता है?"

"मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था कि चींटियों को काटने के लिए कोई बहाना चाहिए।"

"हां, प्राय: ऐसा नहीं होता मगर इस बार उनके पास बहुत अच्छा बहाना था। सुनो, चींटियों ने क्या बताया। उन्होंने कहा :

'नहीं रहेंगी, नहीं रहेंगी हम चुऽऽप चाप
जब यह बच्चा डालेगा
हमारी अपनी चींटी बांबी में
अपने मन से हाथ' !"

"ओह ! कितना मूर्ख बच्चा था ?" शेर ने कहा, "इससे तो उसके लिए एक शेर की मांद में जाना ज्यादा सुरक्षित होता।"

"तुम बिल्कुल ठीक कहते हो", गणपति ने कहा। "किसी तरह बगुलों ने चींटियों को भरोसा दिलाया कि वे बच्चे को ऐसा करने से मना कर देंगे। और वे बच्चे के पास गये और समझाया, छोटे बच्चे, कभी भी चींटियों की बांबी में अपना हाथ नहीं डालना चाहिए। अगर तुम ऐसा नहीं करने का वायदा करोगे तो हम प्रत्येक शुक्रवार को तुम्हारे साथ खेलने आया करेंगे और स्वादिष्ट फल भी लाया करेंगे। बच्चे ने वायदा किया और शीघ्र ही रोना बंद कर दिया। एक घंटे के अंदर ही ग्वाले को बढ़िया खाना मिल गया क्योंकि उसकी पत्नी को अब बच्चे की चिंता नहीं थी। तब ग्वाला अपनी गायों को चरागाह में चरने के लिए लाया। गायों ने चरागाह में उगी लंबी लंबी घास को चर लिया और बगुलों को अपना घोंसला तथा उसमें बच्चे ठीक ठाक मिल गये।"

"मुझे भी प्रसन्नता हुई कि सब राजी खुशी हो गया", शेर ने कहा।

अब वह सचमुच प्रसन्न था।

शेर को घास पर प्रसन्नचित्त लेटा देख गणपति को यही सुअवसर प्रतीत हुआ, जब वह अपनी मुक्ति की कोई चाल चल सकता था। "मैं तुम्हें और भी अच्छी अच्छी कहानियां सुना सकता हूं, मगर इस समय नहीं। अब मैं घर जाना चाहूंगा।" कहते हुए गणपति धीरे से नीचे वाली टहनी पर आ गया, मानो वह नीचे कूदने वाला हो। मगर उसकी दृष्टि निरंतर शेर पर टिकी हुई थी, कहीं वह उस पर आक्रमण न कर दे।

शेर कहानी सुनने में इतना खो गया था कि वह ब्राह्मण पर वार करने की बात भूल ही चुका था। जब अचानक उसे याद आया तो वह उठ बैठा, "नहीं, तुम कहीं नहीं जा सकते।" परंतु अब वह पहले की तरह गुस्से में नहीं था।

गणपति ने समझाते हुए कहा, "शेर भाई, जाने दो। हम यहां सारा दिन नहीं बैठ सकते। खैर, मेरे लिए तो यह बड़ी बात नहीं है क्योंकि मुझे व्रत करने की आदत है, मगर तुम क्या करोगे। अब तक तो तुम्हारे पेट में भूख से दर्द हो रहा होगा?"

शेर जो उम्र का कच्चा था, पूरा दिन भूखे रहने की बात को ही सहन नहीं कर पाया। गणपति ने उसकी परेशानी को ताड़ लिया।

"इसके विपरीत, अगर तुम अभी नदी किनारे जाओ तो निश्चय ही तुम्हें हिरण अथवा बकरियां मिल जायेंगी।" गणपति ने कहा।

शेर ने इस सुझाव पर विचार किया। उसे गणपति की बात उचित लगी, मगर वह गुस्से में था। इसके अतिरिक्त, उसे डर था कि अगर बात फैल जाती है तो भविष्य में वह अपना सिर ऊंचा नहीं कर सकेगा। ऐसा सोचते ही उसे गुस्सा आया और वह दहाड़ा, "नहीं मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा। अगर मैं तुम्हें जाने देता हूं तो तुम अपने सभी दोस्तों को बता दोगे कि मुझे गधे ने दुलत्ती मारी थी।"

"यदि तुम्हें इसी बात की चिंता है तो मैं वायदा करता हूं कि यह बात किसी को भी नहीं बताऊंगा, कृपा कर अब मुझे जाने दो", यह कहते हुए गणपति ने नीचे उतरने की कोशिश की। परंतु शेर ने डराने के अंदाज में अपने अगले पंजों से वृक्ष के तने पर छलांग लगा दी।

बेचारा ब्राह्मण घबराकर पीछे हो गया, उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। मगर तभी नदी की तरफ से बकरियों के मिमियाने की आवाज सुनायी दी। शेर को गणपति की बात याद आ गयी। उसने सोचा, 'बुद्धिमानी इसी में है कि ब्राह्मण को जाने दूं और सामने आयी हुई इन बकरियों को मारूं।'

शेर गणपति की ओर निर्दयता से देखते हुए बोला, "मुझे मानव जाति के वायदों पर भरोसा नहीं है, फिर भी मैंने तुम्हारी बात पर विश्वास करने का निर्णय लिया है। तुमने जो भी आज

देखा है किसी को नहीं बताओगे । लेकिन, अगर मुझे पता चला कि तुमने अपना वायदा तोड़ा है तो मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा ।" शेर मन ही मन खुश हुआ । उसे लगा कि उसने जंगल के राजा की तरह ही बर्ताव किया है । वह मुड़ा और राजसी शान से निर्वृक्ष क्षेत्र में से चल पड़ा ।

शेर के चंगुल से बचने पर प्रसन्न गणपति ने अपनी टोकरी उठायी, उसमें कपड़े भरे और तेज कदमों से गांव की ओर चल पड़ा । उसने मन ही मन निर्णय लिया कि वह हर रोज फूलों के बिना ही पूजा करेगा ।

इस बीच, शेर जंगल में नदी के किनारे किनारे उगी हुई ऊंची घास में स्वयं को छिपाता हुआ टहलने लगा । उसने इधर उधर देखा । नदी के किनारे बकरियों का एक झुंड था, मगर उससे हटकर थोड़ी दूर तीन बकरियां चर रही थीं । शेर उन पर झपटा । इस बार वह भाग्यशाली था । गणपति के कथनानुसार उसे बड़ी आसानी से शिकार मिल गया था । आखिरकार शेर को नाश्ता मिल गया ।

उसका पेट पूरी तरह से भर चुका था। इसलिए वह गणपति को ढूढ़ने के लिए पुन: निर्वृक्ष क्षेत्र की ओर वापस चल पड़ा। मगर गणपति का तो वहां कहीं पता नहीं था। शेर गणपति को ढूंढ़ने लगा। उसने निर्णय किया कि ब्राह्मण को ढूंढ़ने के लिए उसे थोड़ी दूरी पर गांव की बाहरी सीमा पर जाना होगा।

शीघ्र ही शेर गणपति के गांव के काफी नजदीक पहुंच गया। वह कुछ घनी झाड़ियों के पीछे छिप गया और बाहर झांकता रहा। वह वहां से गांव के एक हिस्से, कुछ घरों और मंदिर को देख सकता था। एक कुत्ते तथा कुछ बच्चों के अलावा आसपास कोई भी नहीं था। अत: झाड़ियों की ओट में चलते चलते शेर ने सावधानीपूर्वक एक बेहतर जगह ढूंढ़ ली। यहां से गांव पर नजर रखी जा सकती थी। अब वह घरों की एक पंक्ति के बिल्कुल पीछे था और उसे जिसे ढूंढ़ना था, वह स्वयं सामने कुएं से पानी खींच रहा था।

शेर झाड़ी के पीछे दुबका हुआ सब कुछ देखता रहा। उसने गणपति को यह कहते हुए सुना कि वह अभी आ रहा है। शेर को गणपति के पुन: बाहर आने की आशा थी। दस मिनट बीते, फिर और दस मिनट... शेर को सूर्य की धूप सताने लगी। मगर अभी भी गणपति का कोई अता पता नहीं था। शेर झाड़ी के पीछे छाया में आराम से लेट गया और शीघ्र ही ऊंघने लगा।

चूंकि शेर ने सुबह भरपेट बहुत अच्छा खाना खाया था, इसलिए वह मीठी नींद सो गया। भाग्यवश उस तरफ कोई भी ग्रामवासी नहीं आया। अत: वह पूरी दोपहर मजे से सोता रहा।

तभी कुछ बहस की आवाज से उसकी नींद खुली। ऐसे लगा जैसे गणपति और उसकी पत्नी में कुछ झगड़ा हो रहा था। इसी बीच गणपति के घर का पिछला दरवाजा खुला और वह बाहर घर के पिछवाड़े आ गया। पीछे पीछे उसकी पत्नी थी। पत्नी ने गणपति से पूछा, "बेहतर यही है कि तुम बता दो कि अकेले अपने आप क्यों हंस रहे थे।"

"बता तो रहा हूं कि कुछ भी नहीं है", ब्राह्मण ने उत्तर दिया।

"कोई भी व्यक्ति अकेले अपने होश में बिना बात के नहीं हंसता", पत्नी ने आपत्ति की।

"क्या खुश होना तथा हंसना गलत बात है?" गणपति ने पूछा।

"जब तुम बिना बात के हंसते हो तो मुझे लगता है कि तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो", पत्नी गुस्से में भड़कती हुई बोली।

"आओ, छोड़ो, मैं भला तुम्हारे साथ ऐसे क्यों करूंगा", गणपति ने उसका गुस्सा ठंडा करने के लिए कहा।

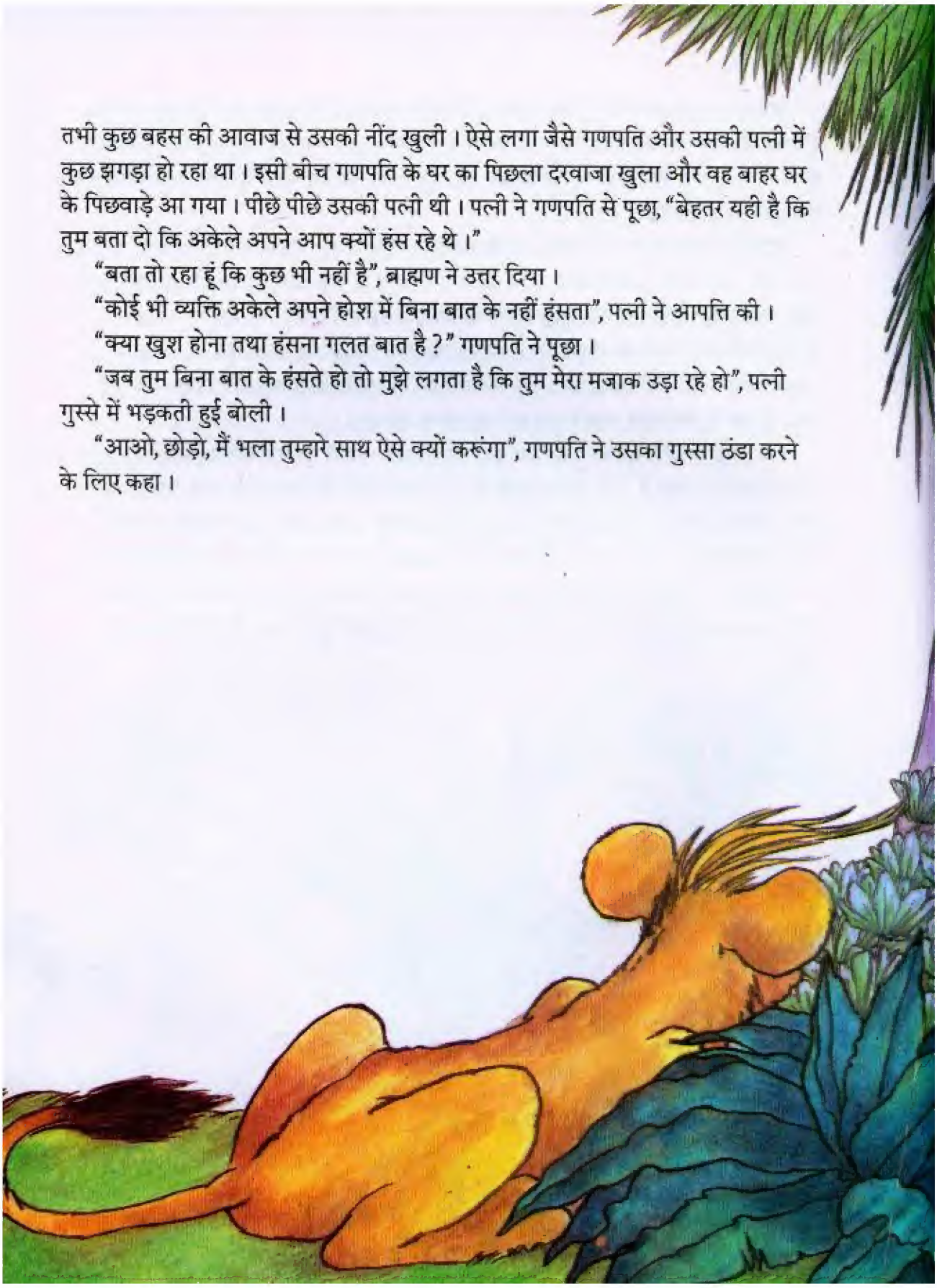

"अगर तुम मेरे ऊपर नहीं हंस रहे थे तो तुम मुझे सच बात क्यों नहीं बता देते ?" उसने कहा ।

"नहीं, कुछ विशेष नहीं है", गणपति ने कहा ।

"यह तो तुम कह रहे हो, मगर जब मैं पीठ फेरती हूं तो तुम हंसने लगते हो । अगर तुम मुझे सच नहीं बताओगे तो मैं तुमसे गुस्सा हो जाऊंगी और कभी भी बात नहीं करूंगी । या मैं यहां से चली जाऊंगी, नहीं तो सबको बता दूंगी कि तुम पागल हो गये हो या मैं..."

गणपति ने डरते हुए कहा, "ठहरो, ठहरो, मैं तुम्हें बता दूंगा कि मैं क्यों हंस रहा था । मगर तुम्हें वायदा करना होगा कि तुम इसे किसी को भी नहीं बताओगी ।"

"बिल्कुल ठीक", पत्नी ने शिकायत भरे लहजे में वायदा किया।

इस प्रकार गणपति ने अपनी पत्नी को गधे तथा शेर की कहानी इतने मजेदार ढंग से सुनाई कि वह भी खूब जोर से हंसने लगी।

उनकी हंसी को सुनकर झाड़ियों के पीछे छिपे शेर का गुस्सा बढ़ता गया। इस अदने से आदमी ने अपना वायदा नहीं निभाया, उसने अपनी पत्नी को सारी बात बता दी और जल्दी ही वह पूरे गांव को भी बता देगा। शेर के लिए यह असहनीय था।

अब शेर की बारी थी। गणपति की पत्नी घर के अंदर चली गयी थी और गणपति वहां अकेला ही था। शेर ने उसी पल उसपर हमला कर दिया और उसे गिरा दिया। उसने अपने पंजे गणपति की छाती पर रख दिये। इस बार गणपति इतना ज्यादा डर गया था कि चीख भी नहीं सका।

शेर ने धमकी भरे स्वर में कहा, "तो तुमने अपना वायदा तोड़ दिया! अब मरने के लिए तैयार हो जाओ।"

तीन

गणपति ने पूछा, "यहां ?"

शेर आक्रमण करने के लिए अपना पंजा उठाते हुए दहाड़ा, "हां, बिल्कुल यहां और अभी ।"

गणपति ने कहा, "रुको, वे तुम पर कभी भी विश्वास नहीं करेंगे ।"

रुकते हुए शेर ने पूछा, "कौन ?"

"दूसरे शेर यह कभी नहीं मानेंगे कि तुमने अपने आप एक आदमी को मारा है ।"

आदमी की बात में दम था । अगर वह अपने परिवार के सदस्यों को जाकर बताये कि उसने एक व्यक्ति को मार दिया है तो वे इसका प्रमाण चाहेंगे । अच्छा यही है कि वह आदमी को जंगल में ले जाये ताकि अन्य शेर भी उसे देख सकें ।

शेर ने चेतावनी दी, "मेरी पीठ पर बैठ जाओ, और अगर तुमने थोड़ी सी चूं चां की अथवा भागने की कोशिश की तो मैं तुम्हें खत्म कर दूंगा ।"

गणपति बिना कुछ बोले चुपचाप शेर की पीठ पर बैठ गया । कम से कम, उसने स्वयं को कुछ समय के लिए तो मृत्यु के पंजे से बचा लिया था ।

शेर जंगल की ओर चल पड़ा । वह बहुत धीरे धीरे चल रहा था क्योंकि गणपति का भार काफी ज्यादा था । अभी वे थोड़ी ही दूर गये थे कि शेर आराम करने के लिए रुक गया । गणपति चुपचाप एक तरफ बैठ गया फिर भी, शेर की कड़ी नजर उसी पर थी ।

"इस बार तुम नहीं बच सकते", शेर ने कहा ।

गणपति ने कोई उत्तर नहीं दिया ।

शेर ने मजाक उड़ाते हुए कहा, "क्या हुआ ? लगता है भगवान की प्रार्थना कर रहे हो ।"

"वह तो मैं पहले ही कर चुका हूं", गणपति ने उत्तर दिया । "वास्तव में, मैं कुछ याद कर रहा था जो मुझे मेरे पिताजी ने एक बार बताया था ।"

"क्या बताया था ?" शेर ने पूछा ।

"उन्होंने बताया था कि जब तुम्हारे सामने कोई समस्या हो और तुम उसे सुलझाने में असमर्थ हो और न ही तुम्हारे पास कोई उपाय हो तो बढ़िया यही है कि उसे ऐसे ही छोड़ दो ताकि वह तुम्हारी इच्छानुसार सुलझ सके ।"

शेर को इसमें कोई बुद्धिमानी प्रतीत नहीं हुई । अत: वह बड़बड़ाया, "मैंने ऐसी बेवकूफी भरी बातें पहले कभी नहीं सुनीं ।"

गणपति ने कहा, "ओह, तुम ऐसा कभी नहीं कहते अगर तुमने चतुर बंदर की कहानी सुनी होती, जो अपने घाटे को सदैव लाभ में बदल लेता था ।"

हमेशा कहानी के प्रलोभन में रहने वाले शेर ने पूछा, "कैसे ?"

"अच्छा ! यह ऐसे था", गणपति ने कहना शुरू किया । "एक बार बंदर की पूंछ में कहीं से एक कांटा चुभ गया । उसने कांटा निकालने की बहुत कोशिश की परंतु असफल रहा । अत: उसने जोर जोर से रोना शुरू कर दिया । उसके रोने की आवाज सुनकर एक पथिक यह जानने के लिए कि उसे क्या हुआ है, रुक गया । इस दयालु व्यक्ति ने कांटा निकालने का प्रस्ताव रखा, एक बढ़िया सा चाकू लिया और धीरे से कांटा निकालने की कोशिश की । परंतु बंदर स्थिर नहीं बैठ

सका और अचानक हिल गया। चाकू हाथ से फिसल गया और बंदर की पूंछ कट गयी।"

बंदर की पूंछ कट जाने की बात पर शेर ने हंसते हुए कहा, "अच्छा हुआ क्योंकि वह अत्यधिक बेचैन हो रहा था।"

"ऐसा ही सबने कहा, मगर क्या तुम सोचते हो कि बंदर चुप रहने वाला था? ओह, नहीं, वह चिल्लाया और जिस व्यक्ति ने उसकी सहायता करने की कोशिश की थी उसे मारने लगा और कहा, 'मेरी पूंछ फिर से लगाओ।' परंतु भला आदमी पूंछ कैसे लगा सकता था? बंदर चीखा, 'नहीं तो अपना चाकू मुझे दे दो।' पथिक लाचार था, अत: उसने बंदर को चाकू दे दिया। बंदर इस सौदे से प्रसन्न होकर चला गया। सत्य तो यह था कि पेड़ों पर झूलने के लिए अब उसकी पूंछ नहीं रही थी, मगर उसके पास एक तेज चाकू था जिससे वह कई तरह के काम कर सकता था।"

"मुझे चाकू लिये हुए बंदर से सख्त चिढ़ है", शेर ने कहा। "कहा नहीं जा सकता कि वह कब क्या शरारत कर बैठे।"

"ठीक, बिल्कुल ठीक। जैसे ही बंदर आगे बढ़ा, उसने कुछ लड़कों को परस्पर हरे हरे आम बांटते हुए देखा। लड़के ज्यादा थे और आम बहुत कम। इसलिए उनका लड़ना स्वाभाविक ही था। बंदर उनका झगड़ा सुनने के लिए रुक गया। वह लड़ाई का आनंद लेने के लिए तैयार था, जो कि शीघ्र ही शुरू होने वाली थी।"

"यदि ज्यादा संगीन न हों तो मुझे भी लड़ाइयां देखना बहुत पसंद है", शेर ने कहा।

"ठीक है, मगर इन लड़कों ने झगड़ा नहीं किया क्योंकि अचानक एक लड़के ने बंदर के हाथ में चाकू देख लिया। उसने बंदर से चाकू मांगा ताकि वे आम बराबर हिस्सों में बांट सकें। बंदर ने चाकू दे दिया और लड़कों ने आम काटने शुरू कर दिये। परंतु एक आम का छिलका इतना सख्त था कि हाय! चाकू टूट गया। लड़के भयभीत थे। बंदर गुस्से में था। तुम अनुमान नहीं लगा सकते कि उसने कितना झगड़ा किया।"

"उसने अवश्य ही झगड़ा खड़ा कर दिया होगा। जब ये बंदर बकबक करना शुरू करते हैं तो दूसरों को पागल कर सकते हैं।"

"बिल्कुल, बेचारे लड़कों को समझ नहीं आ रहा था कि वे क्या करें। बंदर ने कहा या तो मेरा चाकू ठीक करवा दो या फिर मुझे आम दे दो। चाकू तो ठीक नहीं हो सकता था, इसलिए लड़कों ने उसे अपने आम दे दिये। यह सोचते हुए कि उसने एक बार फिर बढ़िया सौदा किया है, थोड़ी थोड़ी देर बाद स्वादिष्ट तथा मीठे आमों को खाता हुआ खुशी खुशी अपने रास्ते चल पड़ा। शीघ्र ही उसके आम खत्म हो गये, अब एक आम बचा था।"

"हरे आम बहुत खट्टे होते हैं", शेर ने कहा। "मैंने भी एक बार एक आम खाया था और मुझे विश्वास था कि मेरे सभी दांत शीघ्र ही टूट जाएंगे।"

"मगर तुम्हें पता है कि बंदरों को फल बहुत पसंद होते हैं। स्पष्ट है कि इस बंदर ने आमों को खूब मजे से खाया, तभी तो अंतिम आम का खोना उसे बुरा नहीं लगा।"

"क्या, खो दिया?"

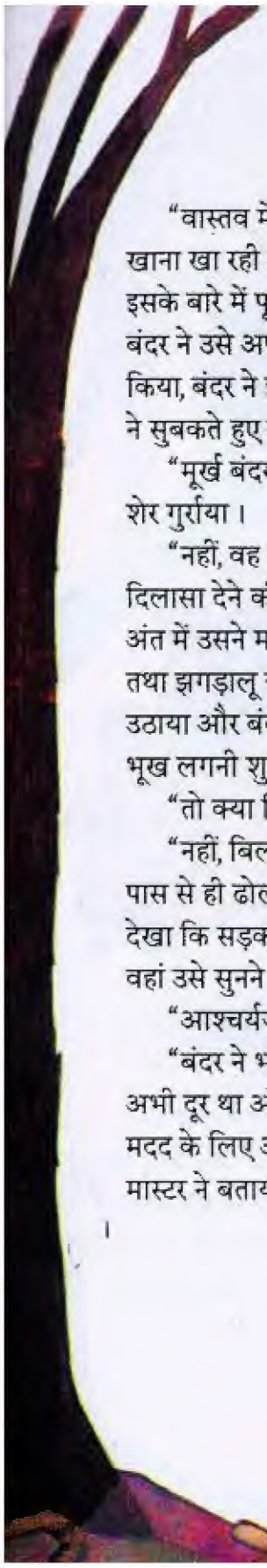

"वास्तव में उसने इसे बुढ़िया को दे दिया था। जब वह पेड़ के नीचे बैठकर दोपहर का खाना खा रही बुढ़िया के पास से निकला तो वह खाते खाते कुछ बुदबुदा रही थी। जब उसने इसके बारे में पूछा तो बुढ़िया ने बताया कि चावलों के साथ उसे कुछ स्वादिष्ट वस्तु पसंद है, तो बंदर ने उसे अपना आखिरी आम दे दिया। लेकिन बुढ़िया ने ज्यों ही आम को खाना शुरू किया, बंदर ने इस तरह चीखना शुरू कर दिया कि वह चौंक पड़ी और पूछा, "क्या हुआ?" बंदर ने सुबकते हुए कहा, "मेरा आम, तुमने खा लिया।"

"मूर्ख बंदर, उसने उसे आम दिया ही क्यों था अगर वह उसे खाने नहीं देना चाहता था?" शेर गुर्राया।

"नहीं, वह मूर्ख नहीं था। बल्कि औरत उसे समझ नहीं सकी थी। अत: उसने बंदर को दिलासा देने की कोशिश की। मगर क्या तुम सोचते हो कि उसने बुढ़िया की बात सुनी होगी। अंत में उसने मांग की कि बुढ़िया उसे बाकी का भोजन दे दे। उस समय तक, वह इस मुखर तथा झगड़ालू जीव से पीछा छुड़ाने के लिए कुछ भी करने को तैयार थी। अत: उसने भोजन उठाया और बंदर को दे दिया। इस अदला बदली पर भी बंदर बहुत खुश हुआ क्योंकि अब उसे भूख लगनी शुरू हो गयी थी।"

"तो क्या फिर कहानी खत्म हो गयी?" शेर ने पूछा।

"नहीं, बिल्कुल नहीं। अभी जब बंदर ने केवल आधा ही भोजन खाया था कि उसे कहीं पास से ही ढोलक बजने की आवाज सुनायी दी और वह उसे देखने के लिए चल पड़ा। उसने देखा कि सड़क के किनारे बैठा एक आदमी ढोलक बजा रहा था, परंतु सड़क सुनसान थी और वहां उसे सुनने वाला कोई भी नहीं था।"

"आश्चर्यजनक, तो वह ढोलक पीट क्यों रहा था", शेर ने पूछा।

"बंदर ने भी उससे यही पूछा, तो ढोलक मास्टर ने बताया कि वह किसी नजदीकी गांव से अभी दूर था और उसे पूरी आशा थी कि उसकी ढोलक की आवाज सुनकर कोई तो उसकी मदद के लिए आयेगा। इस पर बंदर ने पूछा, 'तुम्हें क्या अथवा कैसी मदद चाहिए?' ढोलक मास्टर ने बताया कि वह भूखा था और जानना चाहता था कि उसे खाने के लिए कहां से कुछ

मिलेगा। बंदर के पास अभी कुछ भोजन तो बचा हुआ था, मगर वह उसे ढोलक मास्टर को क्यों दे?"

"क्यों, वास्तव में जब तक उसे इससे कोई लाभ नहीं होना वाला था", शेर ने कहा।

"बंदर ने इस पर विचार किया और ढोलक मास्टर से पूछा कि वह बदले में उसे क्या देगा। मास्टर के पास एक छोटा तथा एक बड़ा, दो ढोलक थे। उसने भोजन के बदले में छोटा ढोलक देने की बात कही। जब बंदर ने इसे देखा तो उसे यह बहुत पसंद आया। अत: उसने उसे अपना बचा हुआ भोजन दे दिया। ढोलक मास्टर आभारी था और बंदर बहुत खुश। उसे लगा कि उसकी सभी इच्छाएं पूरी हो चुकी हैं। तुम्हारे विचार में तब उसने क्या किया होगा?"

"किसी अन्य व्यक्ति के लिए कोई नयी मुसीबत खड़ी की होगी?"

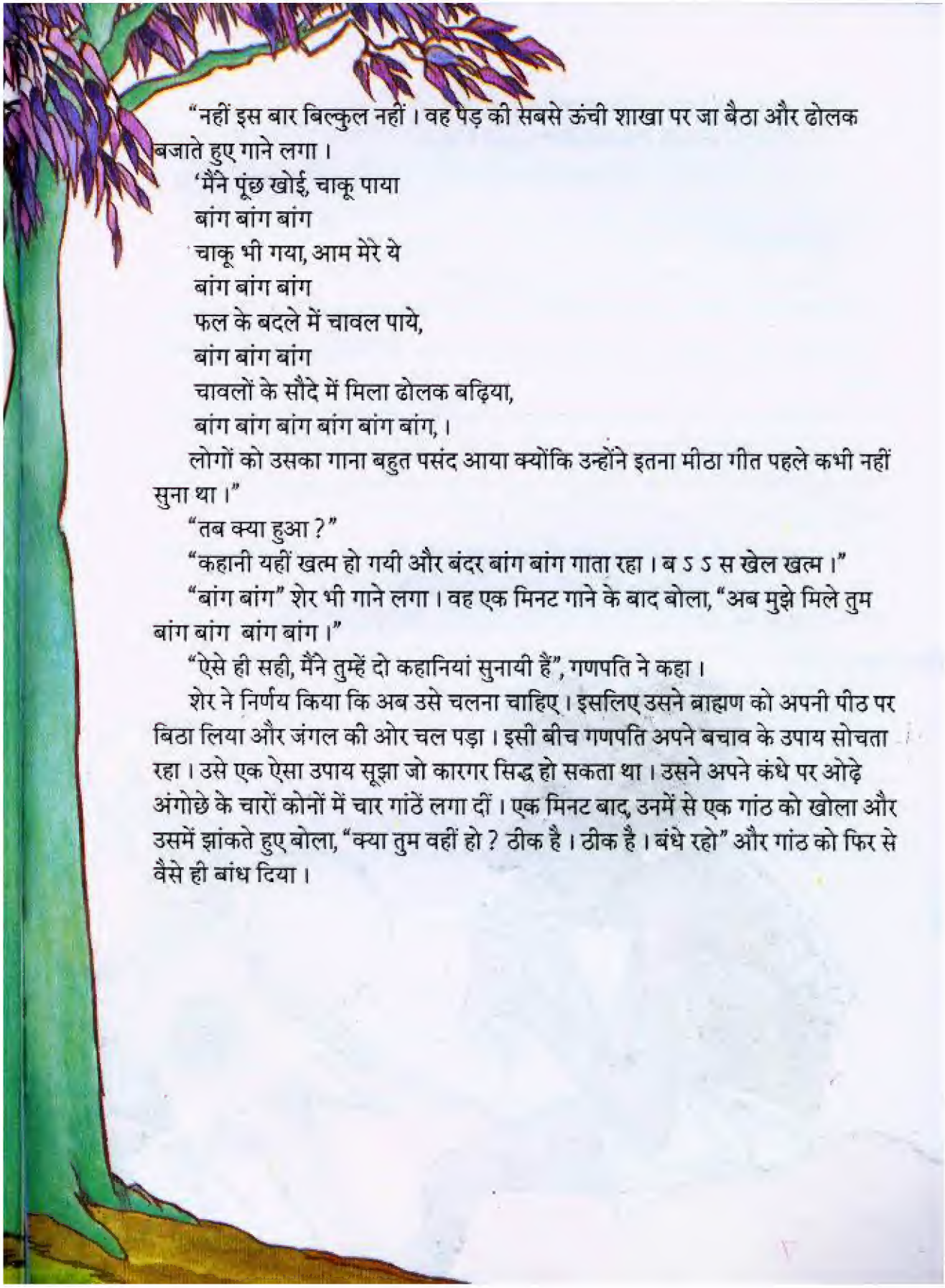

"नहीं इस बार बिल्कुल नहीं। वह पेड़ की सबसे ऊंची शाखा पर जा बैठा और ढोलक बजाते हुए गाने लगा।

'मैंने पूंछ खोई, चाकू पाया
बांग बांग बांग
चाकू भी गया, आम मेरे ये
बांग बांग बांग
फल के बदले में चावल पाये,
बांग बांग बांग
चावलों के सौदे में मिला ढोलक बढ़िया,
बांग बांग बांग बांग बांग बांग, ।

लोगों को उसका गाना बहुत पसंद आया क्योंकि उन्होंने इतना मीठा गीत पहले कभी नहीं सुना था।"

"तब क्या हुआ ?"

"कहानी यहीं खत्म हो गयी और बंदर बांग बांग गाता रहा। ब ऽ ऽ स खेल खत्म।"

"बांग बांग" शेर भी गाने लगा। वह एक मिनट गाने के बाद बोला, "अब मुझे मिले तुम बांग बांग बांग बांग।"

"ऐसे ही सही, मैंने तुम्हें दो कहानियां सुनायी हैं", गणपति ने कहा।

शेर ने निर्णय किया कि अब उसे चलना चाहिए। इसलिए उसने ब्राह्मण को अपनी पीठ पर बिठा लिया और जंगल की ओर चल पड़ा। इसी बीच गणपति अपने बचाव के उपाय सोचता रहा। उसे एक ऐसा उपाय सूझा जो कारगर सिद्ध हो सकता था। उसने अपने कंधे पर ओढ़े अंगोछे के चारों कोनों में चार गांठें लगा दीं। एक मिनट बाद, उनमें से एक गांठ को खोला और उसमें झांकते हुए बोला, "क्या तुम वहीं हो ? ठीक है। ठीक है। बंधे रहो" और गांठ को फिर से वैसे ही बांध दिया।

"किस से बात कर रहे थे ?" शेर गुर्राया ।

"नहीं, किसी से भी नहीं, चलते जाओ", ब्राह्मण ने कहा ।

शेर चलता गया । मगर अभी वह पांच मिनट ही चला होगा कि उसने गणपति को पुन: यह कहते सुना, "क्या तुम वहीं हो ? ओह ! बड़ी खुशी की बात है ! बंधे रहो ।"

"तुम किससे बातें कर रहे हो ?" शेर ने थोड़ा गुस्से में पूछा ।

"अपने आपसे", गणपति ने कहा । "मुझे आदत है ।"

शेर को कुछ कुछ संदेह हो रहा था, मगर शेर को सामने कोई दिख भी नहीं रहा था जिससे युवा ब्राह्मण बात कर रहा हो । संभव है, गणपति अपने आप ही बोलता जा रहा हो, उसने सोच लिया ।

पांच मिनट बाद फिर गणपति ने अंगोछे की तीसरी गांठ खोली और पहले की तरह बोला, "तुम वहीं हो ? ठीक है, बंधे रहो ।" इस बार शेर ने उसे जमीन पर धम्म से गिरा दिया और उसके ऊपर खड़ा होकर गुर्राया, "बेहतर यही है कि बता दो तुम अभी किससे बात कर रहे थे, अन्यथा मैं तुम्हें इसी समय मार दूंगा ।"

अब सभी कुछ युवा ब्राह्मण की योजना के अनुसार ही हो रहा था । मगर उसे पता था कि शेर जितनी देर उसके ऊपर खड़ा है, उतनी ही देर उसे खतरा है ।

गणपति ने एक ठंडी सांस ली और गंभीरता से बोला, "मैं तो केवल अपने सामान की जांच कर रहा था ।"

"सामान ?" शेर युवा व्यक्ति की बात का कुछ सिर पैर नहीं समझ पाया । जैसा कि उसे दिख रहा था, गणपति के पास पहने हुए कपड़ों के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं था ।

"हां ! क्या तुम मेरे अंगोछे के कोने पर बंधी चार गांठों को नहीं देख रहे हो ?"

"ठीक है ! उनमें क्या रखा है ?"

"मेरा सबसे कीमती सामान । मुझे डर था कि जब तुमने मुझे जल्दी में उठाया था तो वह कहीं गिर न गया हो । इसलिए मैं उनसे पूछ रहा था कि वे वहां ठीक ठाक हैं ?"

इससे शेर को और अधिक आश्चर्य हुआ । "यह कैसा सामान है, जिसके साथ तुम बात भी कर सकते हो ?" उसने पूछा ।

"क्या, तुम्हें नहीं पता कि हम मनुष्यों को पशु पालने का शौक है । कुछ लोग कुत्ते, तो कुछ बिल्लियां, कुछ कबूतर, कुछ नेवले, कुछ..."

"ठीक है, ठीक है", शेर ने टोकते हुए कहा । "मुझे समझ आ रहा है । तुमने घर में क्या पाल रखा है ?"

"मेरे पालतू तो सचमुच असाधारण हैं", गणपति ने जोश से कहा । "शायद तुमने तो पहले कभी इतने ज्यादा प्यारे, सुंदर, भोले तथा चतुर पशु देखे ही नहीं होगे । उन्हें देखते ही तुम्हें उनसे प्यार हो जायेगा । उनकी आवाजें मुझे सदैव प्रसन्न रखती हैं । एक बार जब मुझे..."

गणपति की बेसिर पैर की बातें सुनकर शेर अपना धैर्य खो चुका था । अत: वह चिल्लाया, "बकवास बंद करो और ठीक से बात करो । तुम्हारे पास कौन से पालतू पशु हैं ?"

गणपति अपने आप में हंसा (उसकी योजना रंग ला रही थी) । "एकदम सरल, मेरे पास चार गधे हैं, शक्तिशाली और स्वस्थ । बिल्कुल वैसे ही मगर उससे थोड़े बड़े जिसने सुबह तुम्हें दुलत्ती मारी थी ।"

जब गणपति ने ऐसा कहा तो शेर में एक हास्यास्पद परिवर्तन आया । 'गधा' शब्द सुनते ही वह एक कदम पीछे हट गया और उसकी आंखें खतरे के संकेत से गोल हो गयीं । सुबह की दुलत्ती की याद ही पीड़ाजनक थी । वास्तव में उस सुबह की चोट से उसकी आंख सूज गयी थी और कई जगह दर्द हो रहा था । शेर अब कभी भी किसी गधे को नहीं मिलना चाहता था । कभी भी नहीं । निश्चय ही इन गधों को भी नहीं । इस विचार से ही शेर इतना डर गया कि कांपने लगा ।

गणपति ने अवसर का लाभ उठाते हुए कहा, "क्या तुम मेरे चारों गधों को देखना चाहोगे ? मुझे तुम्हें उनके साथ मिलाकर प्रसन्नता होगी ।" चाऽऽर गधे ! इस विचार से ही शेर का खून ठंडा पड़ने लगा । अगर एक गधा इतनी जोर से मार सकता है तो चार गधों से क्या होगा ? इसे अपनी भलाई के लिए यहीं समाप्त कर दिया जाये ।

जब वह ऐसा सोच रहा था तो उसने देखा कि गणपति अपने अंगोछे की गांठ को खोलने के लिए पकड़ रहा था।

हे भगवान, अब चार गधे मुझे मारेंगे। इसी सोच से शेर ने आव देखा न ताव, पीछे को पलटा और उलटे पांवों भाग लिया। इतना तेज शायद ही कभी कोई शेर भागा होगा। दस सेकेंड में ही वह आंखों से ओझल हो चुका था।

गणपति अपनी योजना के सफल होने पर घुरघुराकर हंसता रह गया। ओह ! वह कितना खुश था।

तब गणपति ने अपने घर का रास्ता पकड़ा। उसने तत्काल अपनी चतुराई के बारे में किसी को नहीं बताया। मगर कुछ दिनों में लोग उसकी कहानी जान गये और वह गांव भर में सबसे बहादुर व्यक्ति बन गया।

उम्र के साथ साथ शेर बुद्धिमान होता गया। ज्यों ज्यों उसने इस घटना के बारे में सोचा तो उसे विश्वास हो गया कि उसे बेवकूफ बनाया गया था। एक अंगोछे में एक छोटा गधा तो कसकर बांधा जा सकता है... मगर चार कैसे ?

मुद्रक : पर्सनल ग्राफिक्स एण्ड एडवरटाइजर्स प्रा० लि०, नई दिल्ली